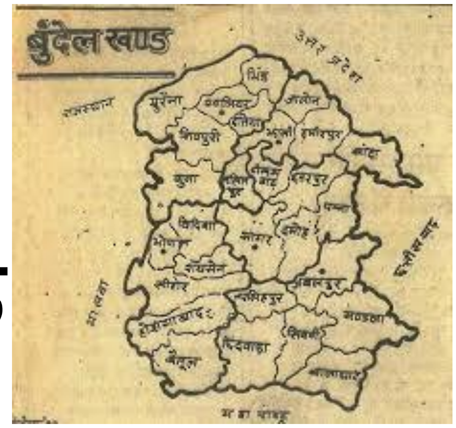
अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





क्लब मैदान
Club & Ground

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

क्लब मैदान Club & Ground

क्लब मैदान **Club & Ground**

अध्याय शीर्षक	क्लब मैदान
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन/ **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण/मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ/साभार/सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Club & Ground**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

क्लब मैदान Club & Ground

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – पुरातन भवनों का संक्षिप्त वर्णन

क्लब मैदान Club & Ground

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

क्लब

हार्पर क्लब
जहीर क्लब
राइफल क्लब
चांदमारी

<u>हार्पर क्लब</u>

बान्दा का सबसे पुराना क्लब है। यह बान्दा के संकट मोचन मंदिर के पास स्थित है। हार्पर क्लब, जिस समय स्थापित हुआ था, उस समय इसके पास तेइस बीघा का रकबा था। एक बीघा में 1750 वर्ग मीटर होता है। इस में से 17.5 बीघा जजी व न्यायाधीश के कालोनी में चला गया।

इस जमीन का कुछ हिस्सा नागरी प्रचारिणी पुस्तकालय के लिए प्रदत्त कर दी गई। नागरी प्रचारिणी पुस्तकालय हार्पर क्लब की जमीन में बना दिया गया। हार्पर क्लब में इस तरीके से अब केवल एक भवन और लगभग पांच बीघा जमीन हार्पर क्लब के पास बची है।

1923 में बान्दा के तत्कालीन अंग्रेज कलेक्टर, सी एम हार्पर,आई सी एस के द्वारा हार्पर क्लब का स्थापना किया गया। इस क्लब की स्थापना श्री हार्पर ने की थी इसलिए इसका नाम हार्पर क्लब रखा गया। क्लब की वास्तुकला 17वीं शताब्दी में बनी अन्य ब्रिटिश इमारतों जैसे बान्दा के येलो चर्च के समान ही है ।



क्लब की इमारत को 183 साल पहले की तरह पीले रंग से ही रंगा गया है।

अंग्रेजों राज्य के समय, अंग्रेज कलेक्टर, बैडमिंटन, एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज, कार्ड गेम, फ्रंट आदि के बड़े शौकीन थे अतः यहां पर इन सब खेलो को खेलने के लिए क्लब की स्थापना कर दी गई। इस क्लब में एलीट क्लास वर्किंग ऑफिसर जो गैजेटेड ऑफीसर हुआ करते थे, ही इससे जुड़े थे 1980 से 85 के बाद क्लब के हालात बाद से बदतर होते चले गये। 2022 में शीतल वर्मा आईएएस डीएम के रूप में आई और जीर्णोद्धार कराया।

डीएम के द्वारा एक कमेटी नियुक्त की गई और 2012 में रामेंद्र शर्मा सचिव नियुक्त किए गए। सचिव महोदय ने संविधान बनाकर, चिटफंड समिति बनाकर, झांसी से रजिस्टर करा दिया। इस वक्त(2023) भी चिट फंड सोसायटी का ऑफिस झांसी में ही है।

क्लब मैदान Club & Ground

उस वक्त, बान्दा आईसीएस, झांसी के अंतर्गत ही था। 1930 में बान्दा के पहले डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया, जो बान्दा में ही रहते थे।



इस क्लब की स्थापना का उद्देश्य यह था कि बान्दा के लोग यहां आ सकें, विभिन्न कार्यक्रमों का आनन्द ले सकें और सान्स्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से सदस्यों की बौद्धिक क्षमता में वृद्धि हो सके।

विचारों का आदान–प्रदान भी इस क्लब की स्थापना का एक कारण था। लेकिन ब्रिटिश काल में भारतीयों के लिए इस पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। आजादी के बाद क्लब के लिए एक समिति बनाई गई, जिसमें 11 सदस्य हैं।

इसमें इनडोर बैडमिंटन स्टेडियम और अभ्यास क्रिकेट पिच है।

अब यह क्लब केवल खेलकूद और प्रदर्शनियों के लिए ही खुला है। अब यहां बुद्धिजीवियों का कोई मिलन समारोह आयोजित नहीं होता।

हार्पर क्लब में एक भवन और लगभग 6 बीघा का मैदान शामिल है।

2006 में, क्लब खादी प्रदर्शनी के कारण सुर्खियों में आया जो यहां लगभग एक सप्ताह तक चली।

जहीर क्लब

बांदा में 1930 से 1931तक के लिए सबसे पहले एच ई बार्लो आईसीएस आए थे, उसके बाद एस एच जहीर आईसीएस यहां आए जिन्होंने 1931 से 1933 तक कार्य किया और जहीर क्लब भी बनवाया। 07 मार्च 1960 तक आईसीएस / पीसीएस यहां के डीएम रहे उसके बाद जे एन कल्याणकृष्णन आई ए एस ने 08मार्च1960 को कार्यभार ग्रहण किया और तब से अभी तक(19जनवरी2025) 67 आई ए एस ही डीएम रहे थे।

क्योंकि बड़े ऑफिसर्स के लिए हार्पर क्लब की स्थापना हो चुकी थी तो उनके अधीन काम करने वाले बाबू लोग पीछे कैसे रहते हैं इसलिए बाबुओं के लिए भी एक क्लब की स्थापना हुई जिसका नाम जहीर क्लब रखा गया और इसकी स्थापना 1923 में हुई। वर्तमान में डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट इसके अध्यक्ष हैं और यहां पर वॉलीबॉल खेल जाता था। सांस्कृतिक व धार्मिक गतिविधियां भी संचालित होती था। अब इसका एक तिहाई हिस्सा पावर हाउस बनाने के

लिए ले लिया गया है और बाकी दो तिहाई हिस्से में सब्जी मंडी बना दी गई है और इस तरह से 2025 में जाहिर क्लब खत्म हो गया। अब इस जगह केवल सब्जी मंडी ही उपस्थित है।

सन 1929 ईस्वी में सर माल्कम हेली, गर्वनर, उत्तर प्रदेश दौरे पर बान्दा आए तो मुसलमान जमीदारों का एक प्रतिनिधिमण्डल ने उनसे मुलाकात की। इसी प्रतिनिधिमण्डल से गवर्नर साहब ने इच्छा जाहिर की कि वह बान्दा की ऐतिहासिक इमारतें और यहां के खास दृश्य देखना चाहते हैं। सैयद हसन जहीर, जिनके नाम पर जहीर क्लब बना, आईसीएस, कलेक्टर, बान्दा थे।

राइफल क्लब

राइफल क्लब बान्दा में खेल का एक स्थान है। इस खेल मैदान की स्थापना 1902 में किसी जमीन्दार ने पुलिस विभाग को अस्तबल, चान्दमारी/निशानेबरजी व परेड के लिए अंग्रेजों को दी थी। लगभग124वर्ष (वर्तमान 2023ई) पहले अंग्रेजों के द्वारा की गई थी जिस समय हारपर क्लब बनाया गया था, लगभग उसी समय शहर के निवासियों को भी खेलने के लिए एक खेल मैदान तैयार कर दिया गया गया था। राइफल क्लब नाम ही क्यों पड़ा किसी को पता नही। यद्यपि यहां पर कोई भी खेल सुविधा नहीं है और सब कुछ जैसा होता है एक प्लान बनता है, जनता खुश। उसके बाद को प्लान को रिप्लान कर फाइल को फाइल कर गुमनामी में गुम हो जाती है। जब इस पर व्यापारियों की नजर पड़ी तो विकास प्राधिकरण के साथ मिलकर उसे व्यावसायिक हब बनाने की कोशिश की जा रही है। टेबल टेनिस हाल (टी टी हॉल) को खिलाड़ियों को अभी तक नहीं दिया गया है और अधिकांश समय बंद ही रहता है। क्योंकि राइफल क्लब बान्दा के केंद्र में आ चुका है अतः व्यवस्थाएं भी फैलने लगीहै। जिन्होंने कभी अपने ऑफिस यहां बना लिए हैं जिनमें बान्दा विकास प्राधिकरण भी है, ने इसमें हब बनाने की कोशिश की है। इसके लिए व्यापारी भी जी जान से जोर लगा रहे है। राइफल के वर्तमान में टूटी हुई दीवार प्रदर्शित करती है कि वह पहले सुरक्षित था लेकिन अब मवेशी और अराजक तत्व शाम के वक्त अपना अधिकार कर, तरह–तरह के कार्यवाहियां करते हैं। और जैसा लगता है कुछ दिन के पश्चात यह राइफल क्लब खत्म हो जाए।

राइफल क्लब की खुद की वर्तमान में कोई जमीन नहीं है। बताया जाता है कि पहले जो थोड़ी बहुत जमीन थी उस पर विकास प्राधिकरण ने कब्जा कर लिया। वर्तमान(2023) में पूर्व खिलाड़ी व विकास प्राधिकरण का विवाद हाई कोर्ट, इलाहाबाद में चल रहा है। राइफल क्लब को विकसित करने के नाम पर विकास प्राधिकरण ने उसे पर अपना ऑफिस बनाकर बान्दा को पिछड़ेपन की तरफ धकेल दिया।

अवस्थी धर्मशाला

1965 के लगभग अतर्रा के अवस्थी जी ने इस धर्मशाला का निर्माण कराया था। शहर में मैदान थे जो अब उपलब्ध नहीं है। जिनमें अवस्थी पार्क भी शामिल था। इतिहास पता नहीं है, लेकिन यह बहुत पुराना है। बान्दा नगर पालिका द्वारा इसे विकसित करते हुए संचालित किया जा रहा है, जो की दर्शन योग्य है।

वृद्ध आश्रम

बान्दा से नरैणी जाते वक्त वृद्ध आश्रम पड़ता है। मातृ दिवस और पितृ दिवस पर अपने बुजुर्गों को याद करने के नाम पर कथित सुशिक्षित लड़के, बहू – बेटे माता–पिता के दर्शन करने आते हैं, जो माता–पिता की जिम्मेदारी से भागने की याद दिला जाते है।

वृद्ध आश्रम की लोकेशन

	जी आर		
1,	25.4449	80.35190	पब्लिक हेल्थ डिपार्टमेंट के द्वारा चलाया जाता था।
2,	25.44868	80.35098	यह पूरी तरह से बंद हो चुका है और नरैनी रोड पर हुआ करता था।

क्लब मैदान Club & Ground